

MUMBAI

A short film by-
Abhishek Chaudhary

Guide: Prof. Shilpa Ranade



Mumbai Chawls & Cutting | Research

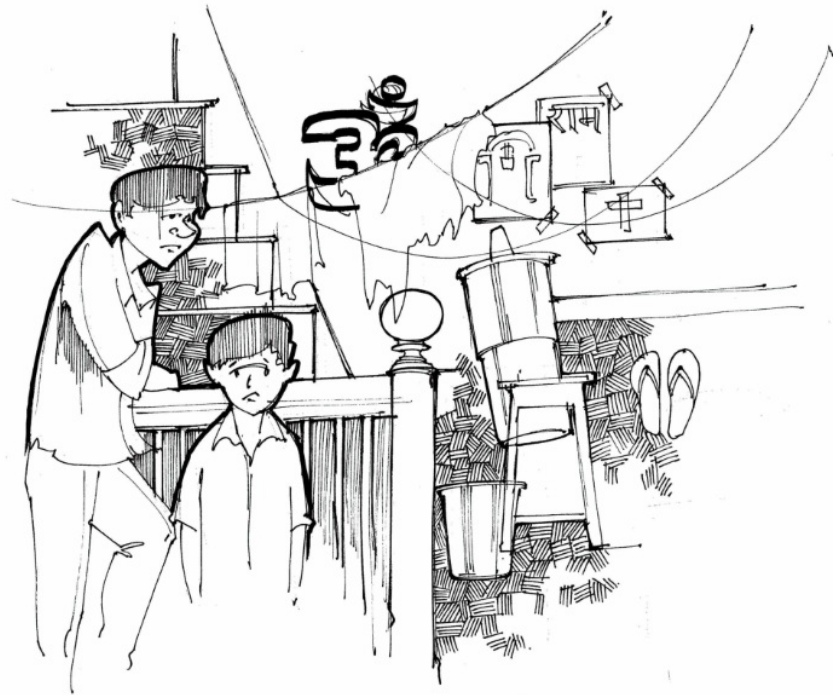
- Visit to Chawls in VT and Matunga



Aunty's story, view of her home

Mumbai Chawls & Cutting | Research

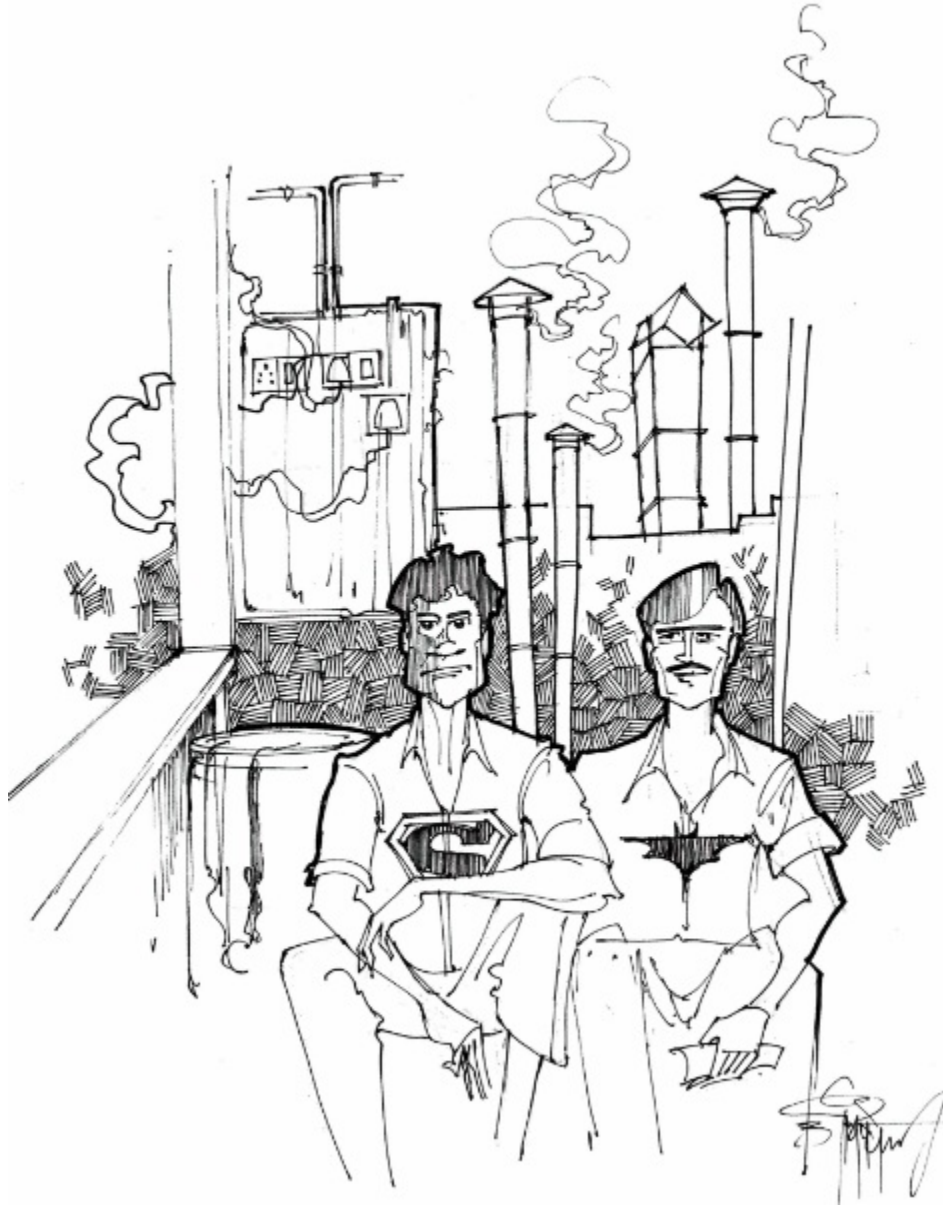
- Sketching and observing
- People and their stories



Old men sits outside, corridor as playground/study room,
everyone knows everyone

Mumbai Chawls & Cutting | Research

- Cottage industries

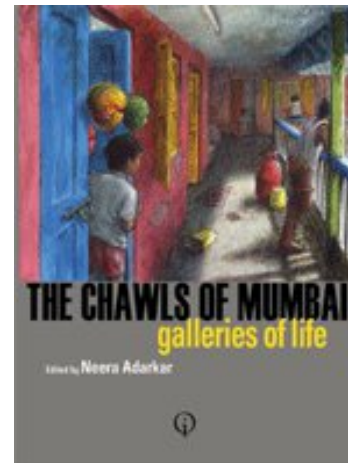
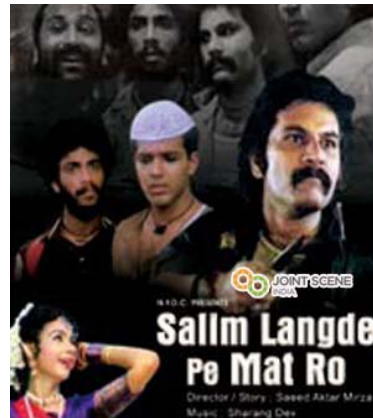
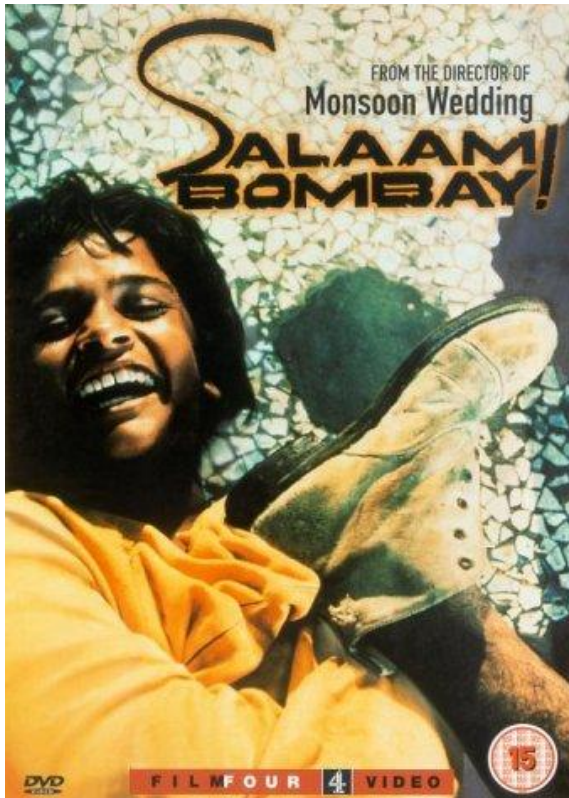


Mumbai Chawls & Cutting | Research

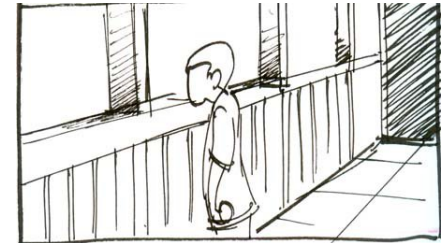
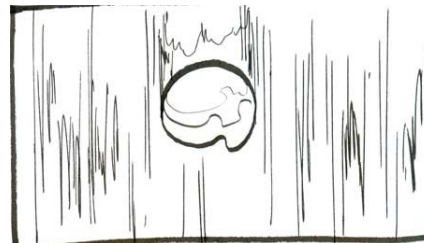
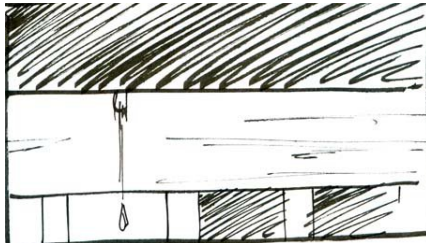
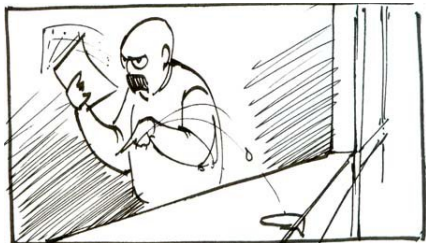
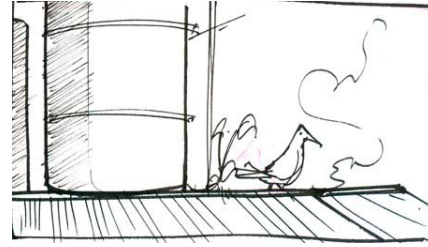
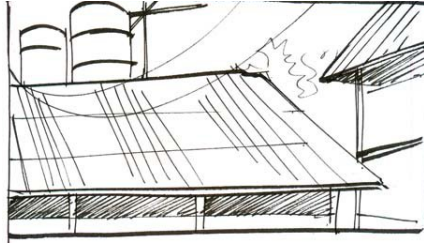
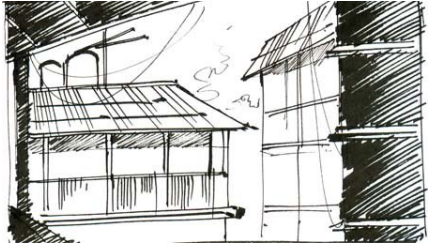


- Movies on Mumbai Chawls
Katha, Piya Ka
Ghar,
Salaam Bombay,
Salim
pe Mat Ro
Langade

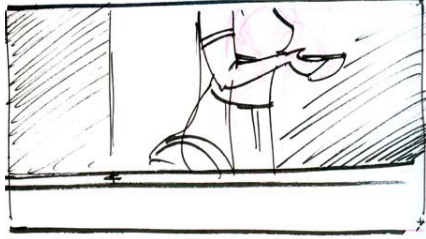
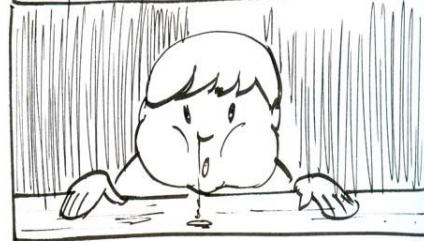
- Books referred
Chawls of Mumbai by Neera
Adarkar,
Ordinary Mr. Pai by Kalpana
Swaminathan



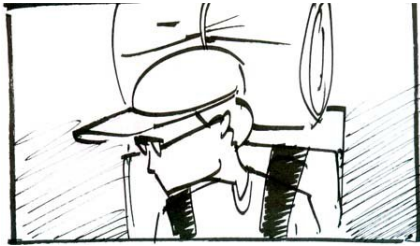
Mumbai Chawls & Cutting | Concept 1



Mumbai Chawls & Cutting | Concept 1



Mumbai Chawls & Cutting | Concept 1



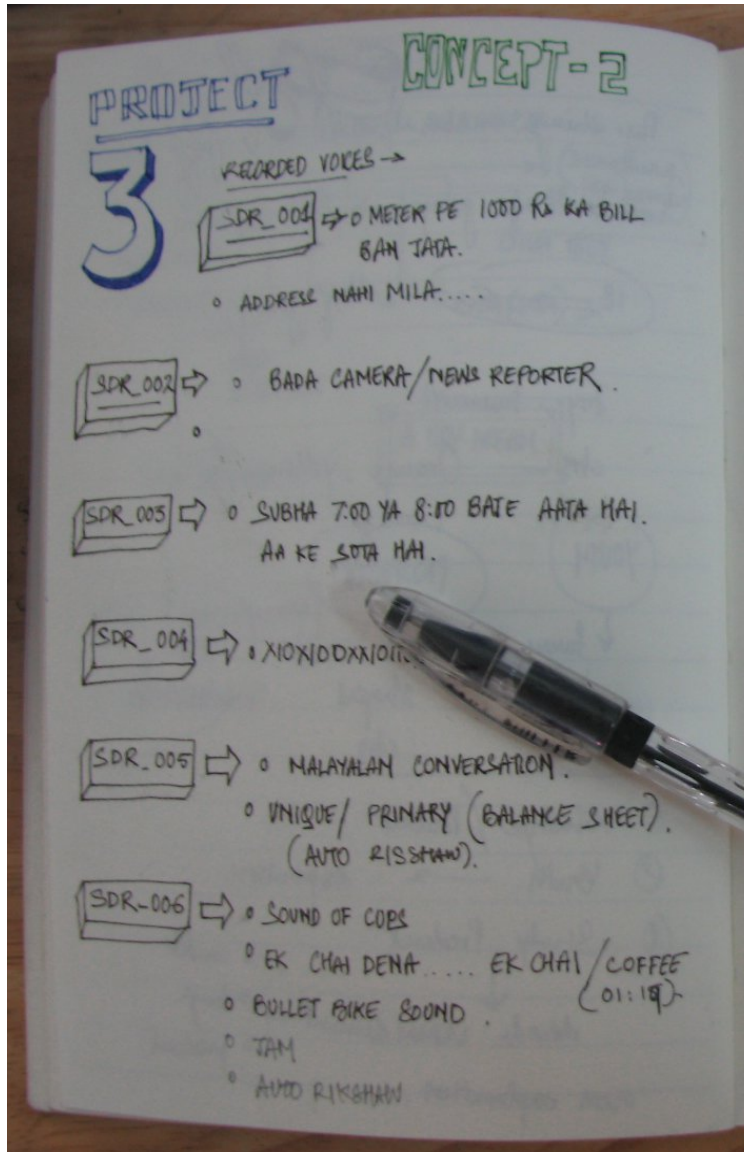
Talk over the cutting | Research



- Conversation of people while sipping daily doze of Mumbai cutting
- Recording sounds from environment

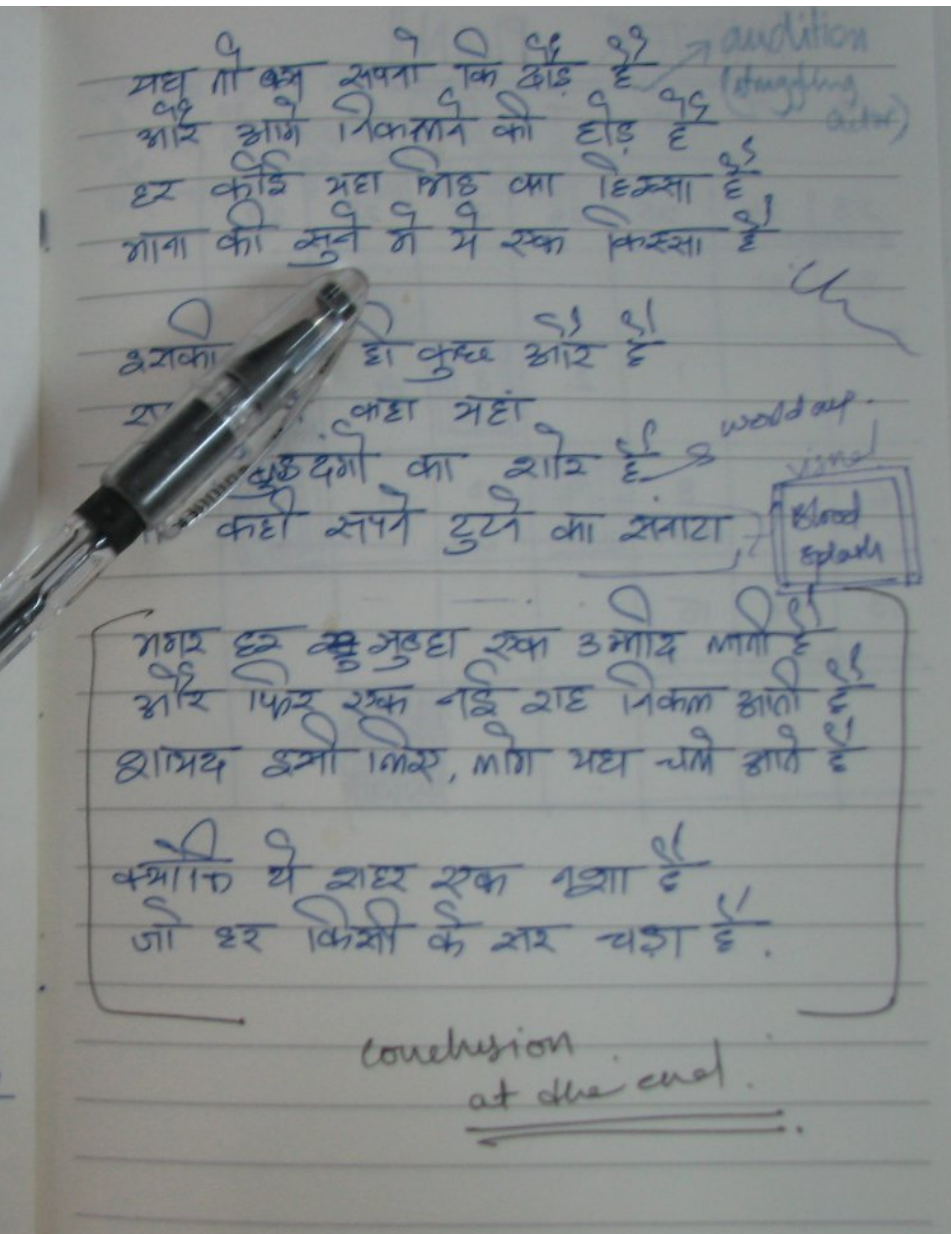


Talk over the cutting | Concept 2



My views on Mumbai | Concept 3

- About Mumbai in form of a poem



My views on Mumbai | Concept 3

एक जाना पहचाना शहर
जो बेठा है दरिया के किनारे
और चमकता है , तारो के सिरहाने
फिर भी सब के लिए नया है
सबकी उमीदो पे खड़ा है
किसी ने सुर्खियों में पड़ा ,
तो किसी ने सपनो मे जड़ा है।

सपनो का शहर है ये
यहाँ रहने वाले लोग, इसे नज़रों से नहीं
एक सपने सा देखते है
यहाँ चश्मा नज़र का नहीं
सपनो का बेचते है।

यहाँ बच्चा चलना नहीं दोड़ना सिखता है
क्युंकी चलने वाला दोड़ मे कहा जीतता है

यहाँ तो बस सपनो की दोड़ है
और आगे निकलने की होड़ है
हर कोई यहाँ भीड़ का हिस्सा है
माना की सुने मे ये एक किस्सा है
इसकी बात ही कुछ और है
रात होती कहा यहाँ
कही हुडदंगो का शोर है
तो कही सपने टोटने का सनाटा
कही लोकल की रफ़्तार
टो कही ट्राफ़िक का थम जाना

कही हुडदंगो का शोर है
तो कही सपने टोटने का सनाटा
कही लोकल की रफ़्तार
टो कही ट्राफ़िक का थम जाना
कभी नए पे खुश होना
टो कभी पुराने पे अफ़सोस मनना
समझ नहीं आता , किस की तारीफ़ करों
उस इंसान की जो आसमान पे बेठा इसे बुलंदी पे ले जा रहा है
या उसके बारे मे कहू
जो सर पे डिब्बे लिए भीड़ मे भागता चला जा रहा है
दुनिया ने कंगुरा देखा, मगर नीव को न देखा
जगमगाती उची मीनारों को देखा
गाडियों मे बेठे नवाबो को देखा
मगर उससे कौन जानता है
जो धूल मे लिपटा, धूप से जलता
ये शहर चला रहा है
और इस शहर मे जीने की किमत
अपने पसीने से चूका रहा है

क्या है असली मुंबई , ये कौन जान पाएगा

मगर हर सुबह एक उम्मीद लाती है
और फिर एक रह निकल आती है
शायद इसी लिए लोग यहाँ चले आते है

क्युंकि ये शहर एक नशा है
जो हर किसी के सर चढ़ा है।

Concept 3 | Style



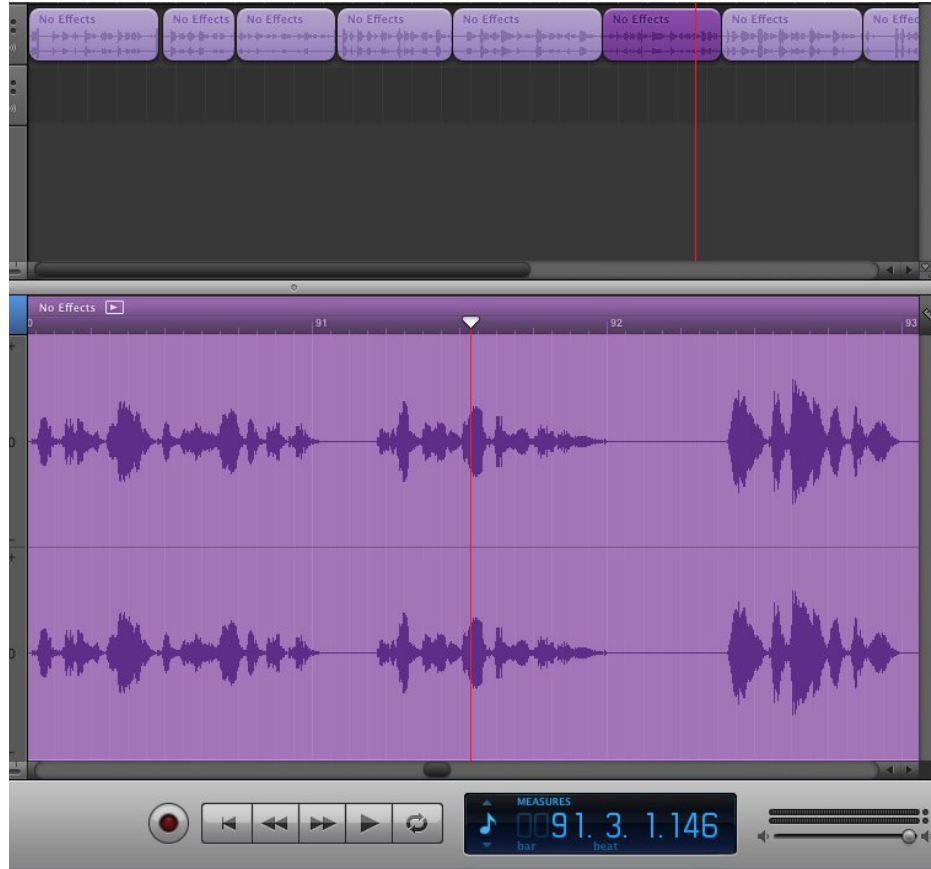
- Graphical Way
- Why ?



Concept 3 | Style



Concept 3 | Sound



Concept 3 | The Film